शिञ्जिनी—आवश्यकार्थे 'आवश्यकाधमर्ण्ययोः—' (3-3-170) इति णिनि-प्रत्यये तदन्तात् ङीष्। शिञ्जा-पचाद्यचि टाप्। इतराणि समस्तान्यपि रूपाणि आदादिक**णिजि**धातुवत् (672) बोध्यानि।

(1709) "**शिञ् निशाने**" (V-स्वादिः-1249. सक. अनि. उभ.) **निशानम्**=तीक्ष्णीकरणम्। सर्वाण्यपि रूपाणि सौवादिक**चिनोति**वत् (519) बोध्यानि। शिन्वन्-ती; शिन्वानः।

(1710) "**शिट अनादरे**" (I-भ्वादिः-303. सक. सेट्. पर.) **शेटकः**-शेटकः-शिशिटिषकः-शिशेटिषकः-षिका, शेशेटकः, इत्यादीनि रूपाणि भौवादिक**केटति**वत् (190) बोध्यानि। शेटनीयम्।

(1711) "**शिल उञ्छे**" (VI-तुदादिः-1362. अक. सेट्. पर.) '**उञ्छः**=उद्धृतसस्यशेषाहरणम्' इति **दुर्गः**। पचाद्यचि—शिलम्। भिदादि-त्वादङि—शिला। सर्वाण्यपीतराणि रूपाणि तौदादिक**केलति**वत् (193) बोध्यानि।

(1712) "**शिष हिंसार्थः**" (I-भ्वादिः-687. सक. अनि. पर.)
'शिषोऽसर्वोपयोगे यौ शेषयेत् शेषतीत्युभे॥
लुङ्घभावादङोऽशेषीत् शिनष्टीति विशेषणे।' (श्लो. 178-9) इति **देवः**।
'**शिषि** पिषि श्लिष्यतिपुष्यती त्विषिम्' इति **व्याघ्रभूति**वचनात् (काशिका 7-2-10) अनिट्त्वं धातोरस्य बोध्यम्।
शेषकः-षिका, शेषकः-षिका, शिशिक्षकः-क्षिका, शेशिषकः-षिका, [1]**शिष्पः**, [2]**शेषः**, इत्यादीनि समस्तान्यपि रूपाणि रौधादिक**पिनष्टि**वत् (1002) बोध्यानि। '**शिष्यति**' 'तल्लोकं **शिंषति**' (गोपथब्राह्मणम् 3-82-2) इत्यादयः प्रयोगाः यथासम्भवं दिवादिषु तुदादिगणेऽवसाने मुचाद्यन्तर्गणे च छान्दसत्वेन पठित्वा साधुत्वसम्भावनार्हाः। अतो न तदर्थं तुदादिपाठावश्यकतेति बोध्यम्।

(1713) "**शिष असर्वोपयोगे**" (X-चुरादिः-1818. अक. सेट्. उभ.)
'शिषोऽसर्वोपयोगे यौ शेषयेत् शेषतीत्युभे। [आधृषीयः।

1. "'खष्प**शिष्प**—' (द.उ. 7-7) इति निपातनात् पप्रत्ययः। **शिष्पः**=कलायोगः" इति **माधवः**।
(द. उ. वृत्तौ 7-7) उपधाया अत्वे **शष्पम्**=घासः इति दृश्यते।
2. शेषति=हिनस्तीति **शेषः**=नागः। कर्तरि बाहुलकात् घञ्।